॥ प्रथम अध्याय ॥

। अमृतलाल नागर का व्यक्तित्व ।

अमृतलाल नागर का व्यक्तित्व :

किसी भी साहित्यकार के व्यक्तित्व को देखे बिना उनके साहित्य का मूल्यांकन पूरा नहीं हो सकता । व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्धारण में जन्म संस्कार, आचरण, शारीरिक गठन, अध्ययन, मनन, चिंतन, बुध्दि-विवेक आदि पर विचार किया जाता है । प्रत्येक व्यक्ति में विवेक, बुध्दी, भावुकता, सामाजिकता आदि गुण विद्यमान रहते है । यह गुण व्यक्ति के आचरण द्वारा व्यक्त होते है । विजयेंद्र स्नातक ने व्यक्तित्व के बारे में लिखा है -

"सामान्यतः व्यक्तित्व शब्द के अंतर्गत हम स्थूल और सूक्ष्म दोनों प्रकार के घटक तत्वों को समाविष्ट कर सकते है । किसी भी कवि, लेखक या कलाकार का व्यक्तित्व उसकी स्थूल बाह्य रुपाकृति तक सीमित नही होता वह उसके स्वभाव, शील, गुण, क्रिया आदि सूक्ष्म चेतनतत्वों तक व्याप्त रहता है ।" १

मनुष्य जीवन का गतिशील तत्व है । व्यक्तित्व और वह मनुष्य के अनुभवों, आदर्शो, एंव सिध्दातों के अनुरुप प्रगति करता है । व्यक्ति के जीवन दर्शन को समझे बिना व्यक्तित्व को हम नहीं समझ सकते ।

प्रतिभा के प्रतिभा संपन्न नागर ने जीवन को जिस रुप में देखा, जाना और समझा है । उससे उनके व्यक्तित्व की रेखाएँ स्पष्ट से स्पष्टतर होती गई है । वे एक ऐसे व्यक्तित्व के धनी सर्जक है जिनके लिए जीवन जीने के कर्म की परिभाषा है, जिजीविषा का पर्याय है । पौरुषेय प्रतिभा और गहन आस्था से मिलकर उनका व्यक्तित्व चेतन हो उठा है । किसी भी लेखक का व्यक्तित्व विशिष्ट युग में विकसीत होता है उस युग की परिस्थितियों पर भी प्रकाश डालना आवश्यक है । उपयुक्त संदर्भो में अमृतलाल नागरजी के जीवन और व्यक्तित्व का विश्लेषण करना प्रस्तुत अध्याय का विषय है ।

हिन्दी साहित्य के लब्ध प्रतिष्ठीत उपन्यासकार श्री. अमृतलाल नागर जी का जन्म एक सुसंस्कृत और प्रतिष्ठीत ब्राम्हण परिवार मे १७ अगस्त १९१६ इ.को आगरा नगर के गोकुलपुरा मुहल्ले में हुआ । उनके व्यक्तित्व के बारे में डॉ. सत्यपाल चुंघ कहते है -

"जीवन संग्राम के जिवंत योध्दा, उदार अलमस्त मानव, रुढिमुक, शैव, आस्तिक, बहुघुमक्कड, बहुप्पुत, बहुपठित, बहुबोली-पारखी, बहु-भाषा, विज्ञ, जागरुक इतिहास पुराण-प्रेमी, पुर्वाग्रह मुक, प्रगतिशील विचारक, अनुसंधिन्सु, क्षेत्रीय शोधकर्ता, योग्य अनुवादक, सुधी सम्पादक, प्रवीण हास्य व्यंग्यकार, कुशल अभिनेता, सफल रंगमंच निर्देशक, प्रवीण सिनेरियों, लेखक, अपूर्व शैलीकार, बाल-साहित्य प्रणेता, और असंख्य लेखो-निबंधो, संस्मरणों, रेडियो, नाटकों एंव कहानियों के रचियता आदि सब को मिलाकर जो व्यकित्व बनता है उसका नाम है अमृतलाल नागर ।" २

व्यकित्व के निर्माण में पारिवारिक जीवन के संस्कार एंव आदर्श महत्वपूर्ण होते है । घर का वातावरण तथा आचार - विचार व्यकित्व निर्माण के मूल होते हैं । व्यकित्व के धनी नागरजी के व्यकित्व निर्माण में घर के संस्कारों एंव उच्चादर्शो का अमिट योगदान रहा है । वह विभिन्न प्रकार के पेतृक संस्कारों को ग्रहण करके समग्रता प्राप्त कर लेता है । अपने बाल्यकाल के संबंध में उन्होने स्वंय लिखा है -

"घर के संस्कार शुध्द थे, अभिभावकों का नियंत्रण कठोर था । मैं अपने बचपन में कभी गली सडक पर लडकों के साथ खेल नहीं सका । पतंग, ताश कुछ भी न जाना ।" ३

माता पिता और परिवार के द्वारा बच्चों पर जिस प्रकार के संस्कार किये जाते है उस संस्कार से ही भविष्य में उस बच्चो का व्यकित्व आकार ग्रहण कर लेता है । इनके पिताजी इंटरमिडिएट पास थे और पोष्ट ऑफिस में क्लर्क का काम करते थे । उनका आचरण बडा ही शुध्द संस्कारी एंव नैतिक था । स्वभाव से क्रोधी होते हुए भी अपने बच्चों के प्रति बहुत ही स्नेह रखते थे । धर्मयुग के बालजगत में अपने बाल्यावस्था के संस्मरण एंव उच्च आदर्शो तथा संस्कारों के विषय में लिखा है -

"एक बार पिताजी के जाली दस्तखत बनाकर स्कूल में अर्जी भेजनेपर उन्हें पिताद्वारा बहुत मार पडी - तू जालिया बनेगा कहते जाये और मारते जाये । उस मार से मेरा अन्तर हिल उठा था

और फिर यह आदत सदा के लिए छूट गयी । अब सोचता हूँ वह मार बहुत भली थी ।" ४

लगभग ढाई सौ वर्ष पूर्व नागरजी के पूर्वज मूल निवासस्थल गुजरात को छोडकर उत्तर प्रदेश के विभिन्न नगरों में आकर बसे थे । सन १८९५ ई. में नागरजी के पितामह लखनऊ के चौक मुहल्ले में आकर बसे थे । तब से लेकर नागरजी का परिवार उसी मुहल्ले में रहा है । चौक के जन-जीवन का अंग बनकर उनका परिवार वहाँ का स्थायी निवासी बना । नागरजी के सामाजिक और साहित्यीक व्यक्तित्व के निर्माण में चौक का जन-जीवन प्रेरक रहा हैं । उनकी अनेक कहानियाँ एव उपन्यासों का सृजन लखनऊ के जीवन की पृष्ठभूमी पर हुआ है ।

नागरजी स्वंय एक संवेदनशील एंव कर्मठ व्यकि थे । उनका पारिवारिक वातावरण इसी संवेदनशीलता और कर्मठता सें ओत-प्रोत है । नागरजी परिवार में ज्येष्ठ होने के कारण अपने दोनों भाईयों से अमित स्नेह रखते थे । उनके मझले भाई श्री. रतनलाल नागर ४ मार्च १९६६ को स्वर्गवासी हो गये थे । ये फिल्मजगत के कुशल कॅमेरा डायरेक्टर थे । अपने भाई की चर्चा करते हुए नागरजी भाव-प्रवण हो उठते थे । भाई की मृत्यू ने उन्हे गहरा सदमा पहुँचा था । इनके सबसे छोटे भाई श्री. मदनलाल नागर लब्ध प्रतिष्ठित चित्रकार और लखनऊ के राजकीय कला महाविद्यालय में प्रोफेसर थे । दुर्भाग्य से ७ अक्तूबर १९८४ को उनकी मृत्यू हो गयी । अपने दोनों भाईयों को खोकर नागरजी अकेले रह गये । एक वाक्य में कह सकते है नागरजी का परिवार कला प्रेमियों का परिवार रहा है । उनके भाईयों की कला प्रियता इसका प्रमाण है ।

नागरजी के पिता अत्यंत महत्वाकांक्षी थे । स्वंय डॉक्टर बनना चाहते थे किंतु पिताजी का उनके प्रति मोह और पारिवारिक मर्यादा के कारण उनकी महत्वाकांक्षा पुरी न हो सकी । पिता के व्दारा इतनी उच्च आकांक्षा प्राप्त होते हुए भी वे इन्टर के प्रथम वर्ग के आगे पढ नहीं सके क्योंकि उनके पिता का आकस्मिक निधन हो गया ।

इन्टर की परिक्षा के उपरान्त ही सोलह वर्ष की अल्पायु में ही उनका विवाह प्रतिभा से ३१ जनवरी १९३१ में हो गया था । नागरजी के साहित्यिक व्यक्तित्व की पूर्णता का श्रेय उनकी

पत्नी श्रीमती प्रतिभा नागर को दिया जाता था । नागरजी के शब्दो में उनकी पत्नी ७५ प्रतिशत अमृतलाल नागर है । एक साहित्यकार कों पत्नी भी ऐसी मिली जो उनके सृजन की पोषिका और सहयोगिनी रही, बाधा नहीं । प्रतिभा नागर कुशल गृहिणी होने के साथ - साथ एक कर्मठ और सक्रीय कार्यकर्ती भी थी । उन्होनें कार्य में तो सहयोग दिया ही साथ ही एक जीवनसाथी के रुप में उनको पारिवारिक संतोष भी दिया । गृहस्थी चलाने के साथ ही साथ प्रतिभा नागर ने घरेलू स्त्रियों के लिए कढाई, बुनाई, सिलाई, संगीत शिक्षा हेतु स्कूल चलाया था । स्वंय नागरजी ने लिखा है -

"मेरी पत्नी पिछले तीन वर्ष से अपनी जैसी कम पढी-लिखी पर नये युग के उत्साह और कर्म भावना से युक्त चार-पांच अन्य महिलाओं के साथ निर्धन लडकियों, स्त्रियों को मुफ्त में सिलाई, बुनाई आदि का काम सिखाने के लिए स्कूल भी चलाती है । "५

इसी स्कूल में एक तवायफ को अध्यापिका पद पर नियुक्त कर श्रीमती प्रतिभा नागर ने एक अदम्य साहसी कदम उठाया था और इसप्रकार २८ मई १९८५ को श्रीमती प्रतिभा नागरजी की मृत्यू हो गयी । उनकी मृत्यू ने नागरजी और सभी आत्मीय जनों को शोकसागर में डूबा दिया नागर जी की जीवन संगिनी का अपना एक अलग व्यक्तित्व था जिसने नागरजी के जिंदगी को अपने ढंग से सजाया और सँवारा ।

नागर दम्पति की सक्रीयता, रुचियाँ, एंव संस्कारों का प्रभाव इनके पुत्र पुत्रियों पर भी पूर्ण रुप से पडा है । इनके बडे पुत्र कुमुद नागर आकाशवाणी दिल्ली में ड्रामा प्रोड्यूसर, रंग कर्मी नाटक एंव बाल साहित्य के लेखक है । दुसरे पुत्र शरद नागर औषधि रसायन शास्त्र में शोध कार्य करने के बावजूद शौकिया नाट्यकर्मी एंव रंगमंच समीक्षक है । नागर जी की बडी पुत्री श्रीमती अचला नागर आकाशवाणी मथुरा की रेडिओ नाटक लेखिका एंव कलाकार है । छोटी पुत्री आरती नागर ने पीएच.डी. उपाधि प्राप्त की है । नागरजी की सुरुचि और परिष्कृत संस्कार उनके घर के वातावरण में व्याप्त है । सभी बच्चे साहिस्यिक और कलात्मक रुचि रखते है स्पष्ट ही नागरजी का परिवार भरा - पूरा और कला के प्रति निष्ठा रखनेवाला परिवार है ।

नागरजी को अपने भौतिक जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पडा परंतु उन्होने बडी हिम्मत से जीवन की विपरित परिस्थितियों का मुकाबला किया । पिता की असामयिक मृत्यू के कारण घर की संपूर्ण जिम्मेदारी नागरजी पर आ पडी । उन्होने दसवी कक्षा से ही अपनी शिक्षा छोड दी । अतः विवश होकर उन्हें नौकरी करनी पडी । सन १९३५ में ही उनको ऑल इंडिया कंपनी में नौकरी मिल गयी । काम डिस्पेंचर का था और वेतन प्रतिमाह तीस रुपये । उन्होंने बडे मनोयोग से अपने नौकरी का प्रारंभ किया । नागर जी स्वतंत्र व्यक्तित्ववाले व्यकि थे इसलिए कंपनी के अधिकारी वर्ग का बंधन उन्हे ऊबा देने लगा और एक दिन कंपनी के अधिकारी के साथ कहासुनी होने के कारण उन्होने नौकरी का इस्तिफा दिया । नौकरी चली जाने के कारण परिवार में आर्थिक विपन्नता आ गयी और एक दिन एक फिल्मी लेखक के साथ बंबई चले आए । यहाँ आते ही उन्होनें फिल्मों कीं पटकथा लिखने कीं कार्य आरंभ किया और उसमें वे सफल भी हो गये । धीरे धीरे नागरजी ने वहाँ अपने पैर जमाए और अपने छोटे भाइयों के लिए वहाँ काम ढूँढ लिया । १९४० से १९४७ के पश्चात फिल्मी क्षेत्र का वातावरण भी उन्हे ऊबा देने लगा । उन्होने फिल्म क्षेत्र की इस वितृष्णा को टुकडे टुकडे दास्तान नामक अपनी आत्मकथा में व्यक करते हुए लिखा है ।

"सन ४० मे मेरे फिल्म क्षेत्र में प्रवेश करने का समय युगसंधि का था । पुरानी थियेट्रीकल कंपनियों के अभिनेता, बाजारू गानेवालियाँ और लेखक मुंशी सेठों के मुसाहब मात्र थे । कहानियाँ धूम-धडाके और मारपीट की ही बना करती थी । भोंडेपन और भोगविलास की ही धू म थी । कुछ स्टुडिओज में सेठो नें अपने विलास कक्ष भी बना रखे थे । " ६

इसके बाद उन्होने फिल्म क्षेत्र छोडने का निश्चय किया लेकिन इस क्षेत्र के अंतरंग यथार्थ में पैठकर उन्होने लगभग २० - २२ फिल्मों का संवाद लेखन किया । फिल्म क्षेत्र में पहली बार डंबिग कला का प्रारंभ किया । उनके इस कला के बारे में प्रसिध्द उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा लिखते हैं -

"वे हिन्दी में बहुत प्रसिध्द उपन्यासकार तो है ही उन्होने फिल्म जगत में पटकथाएँ लिखने का काम भी बडी कुशलता से किया है । एक बात बहुत कम लोग उनके बारे में जानते होंगे कि भारतीय फिल्मों में डबिंग कला का प्रारंभ उन्होंने किया हैं । और ऐसी कुशलता के साथ किया है कि लोग आश्चर्य करते है ।" ७

फिल्म क्षेत्र में उन्होने पर्याप्त धन और प्रतिष्ठा प्राप्त की । सन १९४७ में उन्होने इस क्षेत्र को छोड दिया और लखनऊ चले गये । फिल्म क्षेत्र में जो धन कमाया था उसके आधार पर उनका परिवार चलता था लेकिन कुछ साल के पश्चात फिर उनके सामने आर्थिक समस्या खडी हो गयी और सौभाग्य वश उन्हें आकाशवाणी लखनऊ केंद्र का निमंत्रण मिल गया और ड्रामा प्रोड्युसर के पद पर उनकी नियुक्ती हो गयी । वे सबेरे का समय लेखन कार्य को देते थे । और शाम का समय नौकरी को देते थे । इन दिनों में ही आकाशवाणी के उच्च अधिकारीयों की बैठक में उनका पूरा दिन काम करने को बाध्य किया गया । फलस्वरुप उनके स्वतंत्र लेखन में आँच आने लगी ।

अतः एक दिन उनकी और उनके बडे अफसर की काफी कहा सुनी हो गयी और सन १९५५ में उन्होनें इस नौकरी का भी इस्तिफा दे दिया । उन्होनें अपना संपूर्ण जीवन साहित्य सेवा के लिए अर्पित किया । उनकी जिविका साधन लेखन ही है । सन १९५६ से एक स्वतंत्र लेखक के रुप में अमृतलाल नागरजी का जीवन शुरु हुआ । जो उन्हे निरंतर सफलता और उन्नति की सीढियों पर चढता हुआ अबतक क्रियाशील है ।

हर व्यक्ति की अपनी रुचियाँ और वृत्तीयाँ होती है । एक प्रकार से व्यक्ति के व्यक्तित्व की मानक रुचियाँ उसके जीवन का अहम हिस्सा होती है । नागरजी की विभिन्न रुचियाँ उनके व्यक्तित्व की दीप्त वर्तिकाएँ है । नागरजी ऊँचे गौरवर्णी, तेजस्वी मगर सरल व्यक्ति थे । इनका व्यक्तित्व आरंभ से ही सीधा – सादा रहा । वे हमेशा प्रदर्शन भावना के विरोधी रहे । साहित्य के क्षेत्र में भी और व्यवहार में भी उन्होने प्रदर्शन भावना का त्याग किया था । घर में वे एक सफेद खादी का कुर्ता, पाजामा अथवा एक सफेद धोती को लुंगी के तहमत पहन लेते थे । पैरों में

खडाऊ पहनते थे जो उनके व्यक्तित्व को पवित्रता की आभास में बांध देती थी । चश्मे में झाँकती उनकी आँखे असीम स्नेह प्यार एंव ममत्व की वर्षा करती थी । तडक भडक कपडे भारी भरकम आभूषणों से वे सक्त नफरत करते थे । वे अपने घर में नियमीत रुप में पूजापाठ तो अवश्य करते थे परंतू धार्मिक आडसर, रुढियों से सक्त नफरत करते थे । इसप्रकार बाह्य व्यक्तित्व से संपन्न नागरजी की रुचियाँ भी अनेक प्रकार की है । व्यक्ति की इन रुचियों से ही व्यक्तित्व समग्रता प्राप्त करता है ।

नागरजी उन्मुक्त स्वभाववाले थे । यही कारण है कि उन्हें जो कुछ कहना है उसे कहने से चूकते नहीं और जहाँ मौन रहना है वहाँ अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं । हँसने और कहकहे लगाने की उनकी विशिष्ट आदत थी । बच्चो के साथ हँसना, खेलना, गप्पाबाजी में उन्हे विशेष आनंद प्राप्त होता था । हास्य और व्यंग उनके साहित्य की रसी बसी भावधारा थी । मुक्त ठहाका लगाकर हँसना उनकी आदत थी । डॉ. रामविलास शर्मा ने उनके जिंदादील स्वभाव का परिचय देते हुए लिखा हैं -

"हिंदी के प्रसिध्द लेखक अमृतलाल नागर बहुत दिलचस्प आदमी हैं । देखने में बडे शरीमन मालूम होते है । हँसी-ठहाके, ऊँची आवाज में बहस किसी की नकल, बच्चो में चुहल, कभी गुस्से में धारा - प्रवाह, भाषण और सुननेवाले सन्नाटे में और कभी खुद कुछ मिनटों को चुप क्योंकि मुँह में नया पान जमाया है । सोने का समय छोडकर ज्यादा तर बातें ही किया करते हैं । और जब दुसरे नहीं होते तब कागज पर कलम चलाते हुए अपने पाठक से बातें करते हैं । ८

नागर स्वभाव से अत्यंत विनम्र थे । अपने से बडों के साथ और छोटो के साथ भी वे अत्यंत नम्रता से बात करते थे । वे जब किसी बात कों कहने का प्रारंभ करते थे तब सुननेवालों को मानो अखंड स्नेह, नम्रता और सौजन्य का साक्षात्कार होता था । नागर की इस स्वभावगत विनम्रता के संबंध में. डॉ. सुदेश बत्रा लिखती है -

"नागर की एक प्रमुख विशषेता रही है की विनम्रता उनमें कुटकुटकर भरी हुई है । उनसे बात करते समय एक अखंड स्नेह और सौजन्य का प्रपात झरता सा प्रतीत होता है और आश्चर्य होता है   कि क्या साहित्य का यही महान प्रणेता है । जन-जीवन का यही चितेरा है । उनमें कही भी संकीर्णता दृष्टिगोचर नहीं होती न उनके व्यवहार में और न उनके वैचारिक धरातल पर । " ९

नागर पान और भांग के बेहद शौकीत थे । भांग सेवन के बिना तो उन्हे लिखने का मुड ही नहीं आता था । नागर का यह भांग प्रेम उनके सच्चे जिंदादीली का प्रमाण है ही साथ ही उनके उपन्यास साहित्य में भी स्पष्ट हो गया है । भंग भवानी में मस्त रहनेवाले "अमृत और विष"उपन्यास के पुलीगुरु इसका स्पष्ट प्रमाण है ।

बहुघुमक्कड प्रवृत्ती उनके व्यक्तित्व की एक विशेषता थी । लेकिन उनका घूमना कभी निरुद्देश नहीं हुआ । उन्होने लगभग संपूर्ण भारत का भ्रमण किया था । उन्होने आँखे देखे हर क्षण को, हर पल को जीने की कोशिश की इसी कारण उनके उपन्यासों में वातावरण का चित्रण अत्यंत सजीव हुआ है । उनके इस प्रवृत्ति के बारे में डॉ. सदेश बत्रा कहती है -

"विभिन्न वातावरणों को देखना, घूमना, भटकना, बहुश्रुत एंव बहुपठित होना भी मेरे बहुत काम आता है । यह मेरा अनुभवजन्य मत है कि मैदान में लडनेवाले सिपाही को चुस्त दुरुस्त रखने के लिए जिस प्रकार कि नित्य कवायत बहुत आवश्यक है उसी प्रकार लेखक के लिए उपरोक्त अभ्यास भी नितान्त आवश्यक है । केवल साहित्यिक वातावरण ही में रहनेवाला कथा लेखक मेरे विचार में घाटे में रहता है । उसे विविध वातावरणों से अपना सीधा संपर्क निःसंकोच स्थापित करना चाहिए ।" १०

नागर को भारतीय इतिहास से विशेष मोह था । भारतीय इतिहास में अवध के इतिहास को उन्होने नई दृष्टी से नई भूमीपर लाकर देखा । अवध के इतिहास के प्रति उनके मन में अतिरिक मोह था । डॉ. रामविलास शर्मा के शब्दों मे -

"नागरजी को इतिहास से प्रेम है और इतिहास में भारत के इतिहास से, भारत के इतिहास में अवध के इतिहास से और अवध के इतिहास राजा बेनी माधो और हजरत महल के इतिहास से उन्हे विशेष प्रेम है । अवध के इतिहास की जितनी गहराई से नागरजी को जानकारी है उतनी मेरी परख के अनुसार किसी इतिहासकार को नहीं है ।" ११

प्राचीन संस्कृति के पुजारी होने के कारण उनकी लखनऊ के कोठी में पुरातात्विक अवशेषों का दुर्लभ संग्रह देखनों मिलता है । उनके कोठी विशाल कक्ष अनुपम चित्रों, पुस्तकों, पाषाण मूर्तियों के संकलन से सज्जित है । इतिहास का यह आकर्षण नागर को यहाँ तक ले गया कि उन्होने लखनऊ के नजीक के "लक्ष्मण टिले" की खुदाई करवाई जिससे उन्हे कुछ अवशेष प्राप्त हो गये और जनसाधारण में वे टिला खोदु के नाम से विख्यात भी हो गये थे और इसप्रकार इतिहास पुराण और साहित्य तीनों के प्रति गहरी रुचि का ही प्रतिफल हैं कि उनका कथाकार मात्र कथाकार होकर नहीं रह गया है वह सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक भी बन गया है ।

नागरजी की रुचियाँ गिनाई नहीं जा सकती हैं । अपनी रुचियों के संबंध में वे स्वंय कहते हैं

"लिखने पढने के समय तो बात ही न्यारी है । यो ही चाहे बच्चो के साथ खेलू या नाटकों की रिहर्सल कराऊँ चाहे पुरातत्व की झोंक मे टीले - खण्डहर झाँकू या गली कूचों में बडी बुढियों से, बूढो तजुर्बेकारों से इन्टरव्यू लेता घूमूँ । कमोवेश हर काम में अपना प्राण स्पर्श कराने का अब अभ्यस्त हो गया हूँ ।" १२

नागरजी के व्यक्तित्व की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि, महत्वाकांक्षा उनमें कुट-कुटकर भरी हुई थी । इसी महत्वाकांक्षी प्रेरणाने उनके जीवन को कर्मयोगी बना दिया था । जीवन में जो देखा है अनुभव किया है उसे व्यक करने के लिए वे जी भर के लिखते थे । अपने अंतर के द्वंद को कागज पर अंकित किए बिना वे कभी चैन की साँस नहीं लेते थे । जिंदगी के अंतिम पल तक ७४ साल की उम्र में भी वे कलम के सिपाही रहे । अनेक साथियोंकी, पत्नी की और भाइयोंकी मृत्यू के कारण वे भीतर से दरक गए थे । शरीर साथ नही दे रहा था लेकिन आत्मा

अमर कलाकार बनने के लिए प्यासी थी । अपने परम मित्र ज्ञानचंद गुप्त को अपनी महत्वाकांक्षा के बारे में उन्होने लिखा था -

"जब मरुँ तो संसार अमर कलाकार कहकर मेरे नाम को प्रतिष्ठा दे । महत्वाकांक्षा बुरी चीज नहीं । मेरा अपना अनुभव कहता है महत्वाकांक्षी ही उत्साही एवं आशावादी हो सकता है । साहित्यकार के नाते अपनी महत्वाकांक्षा के अंतिम बिंदु को पाना जीवन का स्वप्न है, सत्य है ।" १३

नागरजी का यह अंतिम स्वप्न भी सत्य हो गया । २३ फरवरी १९९० में इस मर्त्य शरीर को त्यागने के बाद आज वे हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अपने विविध मुखी व्यक्तित्व के कारण अनेक जनों के हृदय में बस गये हैं ।

निष्कर्ष :

श्री. अमृतलाल नागरजी का जीवन प्रारंभ से ही संघर्षमय रहा है । लेकिन इस संघर्षमय जीवन में तपकर ही उनके व्यक्तित्व ने अदभुत निखार पाया है । नागरजी के इस महान व्यक्तित्व के निर्माण में उनके माता-पिता के उच्च आदर्श और संस्कार तथा जीवन संगिनी का सहयोग महत्वपूर्ण रहा है । यह उस लेखक का व्यक्तित्व है जो जितना ही व्यक्ति की गरिमा के प्रति सचेष्ट है उतना ही सामाजिक दायित्व के प्रति भी ।

उनके व्यक्तित्व में विशेष आकर्षण है जो उनसे मिलनेवाले व्यक्ति का हृदय जीत लेता है । हँसते हँसते बाते करने का उनका अंदाज और जिंदादिली उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ हैं । रहन-सहन में सादगी, आकर्षक रंग-रुप, सतत संघर्षशीलता एवं कर्मशीलता पान तथा भांगप्रियता, इतिहास के प्रति गहरा लगाव, घुमक्कड वृत्ति, बहुभाषाज्ञान, बहुश्रुतता, सतत अध्ययन एंव चिंतन बहुमुखी प्रतिभा, महान विचारक, आत्मियता से भरपूर हृदय सृजनधर्मी साहित्यकार आदि तत्वों से मिलकर जो व्यक्तित्व बनता है उसी का नाम श्री अमृतलाल नागर ।

उनका व्यक्तित्व उनकी नैसर्गीक रुचियाँ, पारिवारिक संदर्भ, युगीन भारो, अभावों और अविजित प्रतिभा संसार के दीप्त चेतन कलाकार का पौरुसेय संवेदन हैं ।

संदर्भ

१) विजयेंद्र स्नातक – चिंतन के क्षण पृ. ८

२) डॉ. सत्यपाल चुंघ – आस्था के प्रहरी पृ. १

३) अमृतलाल नागर – ये कोठेवालियाँ पृ. १३

४) डॉ. सुदेश बत्रा – अमृतलाल नागर व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ. ५

५) अमृतलाल नागर – ये कोठेवालियाँ पृ. ७६

६) अमृतलाल नागर – टुकडे-टुकडे दास्तान पृ. १२४

७) डॉ. सुदेश बत्रा – अमृतलाल नागर व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ. ११

८) डॉ. रामविलास शर्मा – पंचरत्न पृ. ९

९) डॉ. सुदेश बत्रा – अमृतलाल नागर व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ. १५

१०) वही पृ. ९

११) डॉ. रामविलास शर्मा – पंचरत्न पृ. १३

१२) डॉ. सुदेश बत्रा – अमृतलाल नागर व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ. १०

१३) डॉ. पुष्पा बंसल – अमृतलाल नागर भारतीय उपन्यासकार पृ. २३